'ललिता देऊळकर और यंग इंडिया रेकॉर्डस'

कुछ दस साल पहले की बात है. बाबूजी (सुधीर फडकेजी) द्वारा निर्मित 'वीर सावरकर' फिल्मका एक खास शो दक्षिण मुंबईमे कुलाबाके टाटा इन्स्टिटयूटमे [टी. आय. एफ. आर.] आयोजित किया था. बाबूजी और ललिताबाई फडकेजी विशेष रूपसे निमंत्रित थे. पूरा भरा हुआ सभागृह देखके दोनो काफी प्रसन्न हुए थे. ऊनका सत्कार हो जानेके बाद ऊन्होने फिल्मका परिचय करवाया. शो शुरू हो गया. कुछ समय बाद वे दोनो बाहर आ गये. सूर्यास्तका समय था. समुंदरके किनारे कुर्सीमें बैठकर दोनोने वो नजारा जी भरकर देख लिया. फिर ऑफिसकी कारमे बिठाकर दोनोंको घरतक छोडने निकल पडा. कुलाबासे दादरतक ऊनके सहवासका अनोखा मौका मिल गया था. पुराने दुर्लभ गाने व ग्रामोफोन रेकॉर्डसका मेरा संग्रह और हमारी 'रिकार्ड कलेक्टर्स सोसायटी'के बारेमे वे जानते थे. गाडी शुरू हो गई और बाबूजीने पूछा, "क्या हमारी श्रीमतीजीके गाने आपके पास हैं? ललिताजीने बहोत गाने गाये हैं पर उनके रिकार्ड हमारे पास नही है. अगर किसीके पास हो तो सुननेकी बडी इच्छा है". "जरूर. हमारे नारायणभाई मुलाणीजीके संग्रहमे सभी गाने जरूर होंगे. लेकिन हमारे पास 'यंग इंडिया' लेबल रिकार्डपर कुछ मराठी और हिंदी गैरफिल्मी गानेभी है. मराठी गाने 'ललिता देऊळकर' नामपर तथा हिंदी गाने 'ललिता देवी' इस नामपर रिलीज हुए हैं. उन गानोंके बारेमें कुछ बातें याद है?" मैने पूछा. यह सुनकर ललिताबाई चौंक पडी. इतनी पुरानी रिकार्डस हासील करके कोई सुनते हैं, इस बातपर यकीन नही हो रहा था. मैने दो चार गानोंकी पंक्तिया गाकर सुनायी तो कुछ कुछ याद

आने लगा. "हाँ. मेरे ही गाने. अच्छा हुआ आपने याद दिलाया. मैं तो पूरी तरहसे भूलही गयी थी. इन्हीं गानोंसे मुझे पार्श्वगायन यानी के प्लेबॅक का मौका मिल गया था. करीबन १९४0-४५ में ये गाने रिकार्ड किये थे. दुलेराय पंडया नामके गुजराथी मालिक थे. ऊन्होने स्वदेशी ध्वनिमुद्रिकाएँ बनानेके लिये 'दि नॅशनल ग्रामोफोन रिकार्ड मॅन्युफॅक्चरिंग कंपनी लिमिटेड'की स्थापना की थी. बंबईमे १९३५ से लेकर १९५५ तक इस कंपनीने काफी काम किया. रिकार्डके लेबलपर तिरंगे झंडेका चित्र छापते थे. इसलिए वे रिकार्ड 'झंडा छाप' रिकार्डसे बिकते थे. विख्यात सिने निर्माता और निर्देशक व्ही. शांताराम (बापू) जी संचालक मंडलीमें थे. शुरूमें 'प्रभात फिल्म कं.'और बादमें 'राजकमल कलामंदिर' के फिल्मोंके गाने इस कंपनीके लेबलपर जारी किये थे. रिकार्ड छपवानेका कारखाना था वडालामें और ध्वनिमुद्रण होता था दक्षिण मुंबईके फोर्टमे. 'मेडोझ' स्ट्रीटपर एक तीन मंझिलकी बिल्डींगमे. आजकल के 'अकबर अली' नामके दुकानके सामनेवाली गलीमे. [कुछ दिन पहले इस इमारतको आग लग गई थी (या लगाई गई थी?)]. ध्वनिमुद्रणका काम भी मानो कारखानेकी तरह शिफ्टमे हुआ करता था. गीतकार, संगीतकार, गायक / गायिका सभी लोग महिनेका तनखा पानेवाले नौकर. सुबह नौ बजेसे लेकर शाम छः बजे तक काम होता था. दोपहर एक घंटा भोजनके लिये छुटी. सभी लोग अपने साथ खाना डिब्बेमे लेकर आते थे. एक दूसरेके साथ बाँटकर खानेमे बडा मजा आता था. वो मजा आजकलके पाँच तारोंवाले होटलके चमकीले खानेमे नही. रोजाना आठ दस गाने मुद्रित होते थे. ऊसमे भी हिंदी, मराठी तथा गुजराथी के अलग अलग विभाग थे. मराठीमे दत्ता डावजेकर थे. हिंदी और गुजराथीके लिये अविनाश

व्यास और लल्लूभाई भोजक.मराठीमे श्री.गजानन वाटवेजीका एक दरिया गीत 'वारा फोफावला' बहुत लोकप्रिय हो गया था.उस गानेके रिकार्डकी पच्चीस हजारसे भी ज्यादा कापियाँ बिक गयी थी.इसीलिये 'दर्यागीतोंकी' मानो एक लहरसी फैली हुई थी.श्रीमती ज्योत्स्ना भोलेजी का गाया दरिया गीत 'आला खुशीत समिंदर' इसी यंग इंडिया लेबलपर वितरित हुआ और खूब चला.इस बातको आगे बढाते हुए गीतकार दत्ता डावजेकरजीने दो दरिया गीत लिखे और उन्हें संगीत देकर मुझसे गवाये.उनमेसे एकका मुखडा 'तुफान, तुफान' था.हिंदी फिल्मोंके कुछ लोकप्रिय गानोंकी टयूनपर शब्द लिखकर नये गीत बनते थे.वे 'व्हर्शन रेकॉर्डस' नामसे जाने जाते थे और खूब बिकते थे.उनमेसेही कुछ गाने मेरी आवाजमे रिकार्ड हुए.उनको सुनकर बाँबे टॉकीजकी मशहूर संगीतकार सरस्वतीदेवीजीने मेरी आवाजको पसंद किया.देविकारानीजीके जमानेसे मैं बाँबे टॉकीजकी फिल्मोंसे जुडी हुई थी.छोटे बडे रोल भी किये थे.सरस्वतीदेवीजीके संगीतसे सजे कुछ गानोंमें कभी कभी कोरसमे गाती भी थी.आगे चलके बाँबे टॉकीजसे निकलकर शशधर मुखर्जी साबने 'फिल्मिस्तान'की स्थापना की और फिल्मे बनाने लगे.सरस्वतीदेवीजीने उनके पास मेरी आवाजकी काफी तारीफ की और प्लेबॅक के लिये मुझे मौका देनेका आग्रह किया.फिर सी.रामचंद्रजीके संगीत निर्देशनमे 'साजन' फिल्मके गाने गानेका मौका मिल गया.'यंग इंडिया' लेबल रिकार्डपर मैने कितने गाने गाए ये तो मुझे याद नही.लेकिन उन्ही गानोंके कारन मुझे पार्श्वगायन के क्षेत्रमे आनेका मौका मिल गया".ललिताजीकी इतनी पुरानी यादें ओर जानकारी सुनकर मेरी तरह बाबूजीभी दंग रह गये.इतना समय वे सीटपर सिर रखके और आँखें बंद करके शांतीसे

सुन रहे थे.अब सँवरकर बैठ गये और बोलने लगे, "सुनिये चांदवणकरजी, मैं इस फिल्मी दुनियामे बिल्कुल नया था, मेरी अपनी कुछ भी पहचान नही थी.ऊस जमानेसे ये अभिनय और गानेके क्षेत्रमे व्यस्त थी.हमारा घरसंसार और गृहस्थीकी शुरूवातमें इनकी आमदनीका बडा सहयोग हुआ करता था.इनके गलेके हिसाबसे मैं ज्यादा अच्छे गाने इन्हें नही दे पाया.इस बातका मुझे काफी दुख होता है." मैने कहा, "ये क्या कहते हो बाबूजी? मिसालकी तौरपर मराठीके प्रसिद्ध 'सुवासिनी' फिल्मके गानेही लिजीये.महाकवी ग.दि.माडगूळकरजीने 'एरी मैं तो प्रेम दिवानी' इस मीराबाईके भजनका मराठी रूपांतर 'मी तर प्रेम दिवाणी' इस गीतमें कर दिया.फिल्ममे इसकी दो अलग रागोंमे रचना है.आशा भोसलेजीने आपकी रचना बहुतही सुंदर गायी है.लेकिन पिलु रागपर आधारित आपकी अलग टयून ललिताजीने बडी सुंदरतासे और दिलके अंदरसे गायी है.फिर भीमसेनजीके साथ गायी हुई वो तोडी रागकी बंदिश?"

"आपने सही फर्माया" बाबूजी बोले, "लेकिन यह कुछ अपवादरूप गाने थे.इनके सभी ऊपलब्ध गाने एकसाथ बैठकर सुननेकी इच्छा है.इस फिल्मके प्रमोशनका काम पूरा हो जाने दो.फिर मुलाणीजीके घरमे मिलते हैं."बातोबातोंमें शिवाजी पार्कके पास पहुँच भी गये.फिर मिलनेका वादा करके वापस निकल पडा.काफी समय बीत गया.एकसाथ बैठकर गाने सुननेका मौका कभी नही आ पाया.आठ साल पहले बाबूजी चले गये.अब तो ललिताजी भी नही रही.हालहीमें हमारी 'सोसायटी ऑफ इंडियन रिकार्ड कलेक्टर्स' के सभासदोंने 'यंग इंडिया' लेबलके रिकार्डसपर काम शुरू किया.उसमें

'ललिता देऊळकर' और 'ललिता देवी' इस नामके रेकॉर्डस मिले. उन्हें देखकर ललिताजीकी याद आ गई. अभीतक आठ मराठी और चार हिंदी रिकार्डस मिल गए हैं. मराठीमे दो अभंग मुद्रित किये हैं. उनमेसे एक संत तुकारामजीका मा. परशरामके साथ गाया है. ऊसका संगीत पी. मधुकर यानी मधुकर पेडणेकरजीका है. बाकी गाने भावगीत प्रकारके हैं और ऊसमे तीन दर्यागीत शामील हैं. ये गाने श्री. दत्ता डावजेकरजी और श्री. दत्तू बांदेकरजीने लिखे हैं. ऊनके बोल इस प्रकार हैं - 'तारूं आलं किना-याला', 'तुफान, तुफान' और 'नाखवा करूं अंधारी शिकार'. अन्य गीत श्री. शांताराम आठवलेजी और बी. महाबळजीके लिखे हुए हैं. इन गानोंके संगीतकार है सर्वश्री दत्ता डावजेकर और श्रीधर पार्सेकर. एक मराठी भावगीत बाळासाहेब दांडेकरजीके साथ युगलगानके रूपमें गाया है. बाकी गाने सोलो प्रकारके हैं. भावगीत प्रेमविषयपर आधारित हैं और ऊनके बोल हैं - 'सजणा का तू रूसला', 'नको बोलू रे सजणा', 'लावू नको मज हात', 'जिवलग नाही घरी', 'जिवास जडले पिसे', 'रामा कुठे शोधू तुला', 'तुझ्या डोळयात भरला जादू', 'उडून गेला ग पोपट'. 'जो जो बाळा' [टयून - 'धीरे धीरे आ रे बादल'] यह एक लोरीगीत है. 'कां कोप असा' इस गानेकी टयून 'अब तेरे सिवा कौन मेरा' इस गानेकी है. पुरानी 'किस्मत' फिल्मके गानोंकी टयून मराठी शब्दोंके साथ सुनते हुए आज इतने सालोंके बाद भी बडा अजीबसा लगता है.

'ललिता देवी' इस नामसे चार हिंदी गीतोंके रिकार्ड मिले जिसमें कुल मिलाकर आठ गाने हैं. इनमेसे सात गाने ललिता देवीजीने गाए हैं और आठवाँ गाना बिमलाकुमारी (यानीकी लाहोरकी विख्यात

अभिनेत्री और गायिका झीनत बेगम) की आवाजमे है.सातमेसे छः गाने सोलो और एक युगल गीत मि.सादिक के साथ गाया है.गाने लिखे हैं कवि फिरोझ और मयूरध्वजजीने.संगीतकारोंके नाम लेबलपर लिखे नहीं हैं.इन गीतोंके टयून ऊस जमानेके मशहूर फिल्मी गीतोंकी धुनोंपर आधारित हैं.उदा.'मन धीरे धीरे रोना' ये 'खजांची' फिल्मका गाना.ललिता देवीजीके आवाजामे मुद्रित ये गाने भी सुननेको काफी अच्छे लगते हैं.ये गाने सुननेके लिये और ऊसपर कुछ बोलनेके लिये अब हमारे बीच ललिताजी नही रही.लेकिन आनेवाली पिढीयाँ अगर चाहे तो सी.डी.आयपॉड और इंटरनेटके जरिये इनका आस्वाद लेकर कुछ अभ्यास कर सकती है.

डॉ.सुरेश चांदवणकर, नेव्हीनगर, कुलाबा, मुंबई
२७ मे २०१०. सेल फोनः ९९२०८१३३३६
E-mail : chandvankar.suresh@gmail.com

बाबूजी व ललिताबाई – सहजीवनाच्या शुभारंभी

'ललिता देऊळकर'जीके मराठी गाने

1] DA 6699 नाखवा करूं अंधारी शिकार
- सह बाळासाहेब दांडेकर
लावू नको मज हात - बाळासाहेब दांडेकर
कवि - दत्तू बांदेकर

2] DA 11235 कां कोप असा / जो जो बाळा
कवि - शांताराम आठवले

3] DA 11373 सजणा का तू रूसला / उडून गेला ग पोपट
कवि - दत्तू बांदेकर

4] DA 11374 नको बोलू रे सजणा / किती बाई मन ध्याले
कवि - दत्तू बांदेकर

5] DA 11423 जिवलग नाही घरी / जिवास जडले पिसे
कवि - शांताराम आठवले, संगीत - श्रीधर पार्सेकर

6] DA 11649 तारूं आलं किना-याला / तुफान तुफान
चाल व शब्द - दत्ता दावजेकर

7] TM 8637 रामा कुठे शोधू तुला
तुझ्या डोळयात भरला जादू
कवि - बी.महाबळ

8] DA 11873 एकच टाळी झाली - अभंग,
सह - मा.परशराम
देवा येसी का न येसी - तुकाराम अभंग
संगीत - पी.मधुकर

ललिता देवी (देऊळकर) जीके हिंदी गाने

1] MM 7167 नदी किनारे नदी किनारे
छाई घटा है काली
कवि - फिरोझ,

2] DA 6356 ए मन धीरे धीरे रोना
नैनो के बान रीत अनोखी - बिमलाकुमारी

3] DA 11282 केहती है दिवाली
पंछी जा सुख संदेशा ला
कवि - फिरोझ और मयूरध्वज

My National Voices, Series No.8

4] DA 11367 गई जवानी रही कहानी
नयनका इशारा हो
मि . सादिक सह
कवि - फिरोझ